(1800/YSH/NKL)

मैंने कहा था कि मैं देश को अगले 1000 वर्षों तक समृद्ध और सिद्धि के शिखर पर देखना चाहता हूँ। तीसरा कार्यकाल अगले 1000 वर्षों के लिए एक मजबूत नींव रखने का कार्यकाल होगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं भारतवासियों के लिए, उनके भविष्य के लिए बहुत ही विश्वास से भरा हुआ हूँ। मेरा देश के 140 करोड़ नागरिकों के सामर्थ्य पर अपार भरोसा है। मेरा बहुत विश्वास है। 10 वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं। यह सामर्थ्य को दिखाता है।... (व्यवधान) मैंने हमेशा कहा है कि गरीब को अगर साधन मिले, गरीब को अगर संसाधन मिले, गरीब को अगर स्वाभिमान मिले तो हमारा गरीब गरीबी को परास्त करने का सामर्थ्य रखता है और हमने वह रास्ता चुना और मेरे गरीब भाइयों ने गरीबी को परास्त करके दिखाया है।

इसी सोच के साथ हमने गरीब को साधन दिए, संसाधन दिए, सम्मान दिया, स्वाभिमान दिया। आज 50 करोड़ गरीबों के पास बैंक खाता है। वे पहले कभी बैंक से गुजर नहीं पाते थे। आज 4 करोड़ गरीबों के पास पक्का घर है। घर उसके स्वाभिमान को एक नया सामर्थ्य देता है। 11 करोड़ से अधिक परिवारों को पीने का शुद्ध जल, 'नल से जल' दिया है। 55 करोड़ से अधिक गरीबों को 'आयुष्मान भारत' कार्ड मिला है। घर में कोई भी बीमारी आ जाए और उस बीमारी के कारण वह फिर से गरीबी की तरफ न चला जाए, उसको भरोसा है कि कितनी भी बीमारी क्यों न आ जाए, उसके लिए मोदी बैठा है। 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज की सुविधा दी गई है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मोदी ने उनको पूछा, जिनको पहले कोई पूछता तक नहीं था।... (व्यवधान) देश में पहली बार रेहड़ी-पटरी वाले साथियों के बारे में सोचा गया। 'पीएम स्वनिधि योजना' से आज वे ब्याज के चक्कर से बाहर निकले और बैंक से पैसे लेकर अपने कारोबार को बढ़ा रहे हैं। देश में पहली बार जिनका सामर्थ्य हाथ का हुनर है, जो राष्ट्र का निर्माण भी करते हैं, ऐसे मेरे विश्वकर्मा साथियों के बारे में सोचा गया। उनको आधुनिक टूल्स, आधुनिक ट्रेनिंग, पैसों की मदद तथा उनके लिए वैश्विक मार्केट खुल जाए, यह मेरे विश्वकर्मा भाइयों के लिए हमने किया है। देश में पहली बार पी.वी.टी.जी., यानी जनजातियों में भी अति पिछड़े हमारे जो भाई-बहन हैं, चूँकि उनकी संख्या बहुत कम है। उन पर वोट के हिसाब से किसी की नजर नहीं जाती है, लेकिन हम वोट से परे हैं। हम दिलों से जुड़े हुए हैं। इसलिए पी.वी.टी.जी. जातियों के लिए 'पीएम जनमन योजना' बनाकर उनके कल्याण का मिशन मोड में काम उठाया है। इतना ही नहीं, सरहद के जो गांव थे, जिनको आखिरी गांव करके छोड़ दिया गया था, हमने उन आखिरी गांवों को पहला गांव बनाकर विकास की पूरी दिशा बदल दी है।

(1805/RAJ/VR)

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं बार-बार मिलेट्स की वकालत करता हूं। दुनिया के अंदर जाकर मिलेट्स की चर्चा करता हूं। जी-20 देश के लोगों के सामने गर्व के साथ मिलेट्स परोसता हूं, इसके पीछे मेरे दिल में तीन करोड़ से ज्यादा मेरे छोटे किसान हैं, जो मिलेट्स की खेती करते हैं। उनके कल्याण से हम जुड़े हुए हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं वोकल फॉर लोकल की बात करता हूं, जब मैं मेक इन इंडिया की बात करता हूं, तब मैं करोड़ों गृह उद्योग, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, उससे जुड़े हुए मेरे लाखों परिवारों के साथ, उनके कल्याण के लिए सोचता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, खादी, कांग्रेस पार्टी ने उसको भुला दिया, सरकारों ने भुला दिया, आज मैं खादी को ताकत देने में सफलतापूर्वक आगे बढ़ा हूं, क्योंकि खादी के साथ, हैंडलूम के साथ करोड़ों बुनकरों की जिंदगी लगी हुई है, मैं उनके कल्याण को देखता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारी सरकार हर कोने में गरीबी को निकालने के लिए, गरीब को समृद्ध बनाने के लिए अनेक वित्त प्रयासों को कर रही है। जिनके लिए वोट बैंक ही था, उनके लिए उनका कल्याण संभव नहीं था। हमारे लिए उनका कल्याण राष्ट्र का कल्याण है और इसलिए हम उसी रास्ते पर चल पड़े।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस पार्टी ने, यूपीए सरकार ने ओबीसी समुदाय के साथ भी कोई न्याय नहीं किया है, अन्याय किया है।...(व्यवधान) इन लोगों ने ओबीसी नेताओं का अपमान करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। कुछ दिनों पहले जब कर्पूरी ठाकुर जी को भारत रत्न दिया, हमने वह सम्मान दिया, लेकिन याद करिए, उस कर्पूरी ठाकुर जी, अति पिछड़े समाज से ओबीसी समाज के उस महापुरुष के साथ क्या व्यवहार हुआ था? किस प्रकार से उनके साथ जुल्म किया? वर्ष 1970 में, वे बिहार के मुख्यमंत्री बने। उनको पद से हटाने के लिए कैसे-कैसे खेल खेले गए थे? उनकी सरकार अस्थिर करने के लिए क्या कुछ नहीं किया गया था?

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस को अति पिछड़ा व्यक्ति बर्दाश्त नहीं हुआ था। वर्ष 1987 में जब कांग्रेस के पास, पूरे देश में उनका झंडा फहराता था, सत्ता ही सत्ता थी, तब उन्होंने कर्पूरी ठाकुर को प्रतिपक्ष के नेता के रूप में स्वीकार करने से मना कर दिया और कारण क्या दिया कि वे संविधान का सम्मान नहीं कर सकते।...(व्यवधान) जिस कर्पूरी ठाकुर ने पूरा जीवन लोकतंत्र के सिद्धांतों के लिए, संविधान की मर्यादाओं के लिए खपा दिया, उनका अपमान करने का काम कांग्रेस पार्टी ने किया।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कांग्रेस के हमारे साथी आज कल इस पर बहुत चिंता जताते हैं कि सरकार में ओबीसी के कितने लोग हैं, कितने पद पर कहां हैं, उसका हिसाब-किताब करते रहते हैं, लेकिन मैं हैरान हूं कि उनको इतना, सबसे बड़ा ओबीसी नजर नहीं आता है।...(व्यवधान) कहां आंखें बंद करके बैठ जाते हैं?... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, ये दुनिया भर की चीजें करते हैं।...(व्यवधान) मैं कहना चाहता हूं।... (व्यवधान) यूपीए के समय एक एक्स्ट्रा कॉंस्टिट्यूशनल बॉडी बनाई गई थी, जिसके सामने सरकार की कुछ नहीं चलती थी।

(1810/KN/SAN)

नेशनल एडवाइजरी काउंसिल – जरा कोई निकाल कर देखें कि उसमें क्या कोई ओबीसी था? जरा निकाल कर देखिये। इतनी बड़ी पावरफुल बॉडी बनाई थी और उसे अपॉइंट कर रहे थे।

आदरणीय अध्यक्ष जी, पिछले 10 वर्षों में नारी शक्ति के सशक्तीकरण को लेकर अनेक विध कदम उठाए गए हैं।... (व्यवधान) नारी के नेतृत्व में समाज के सशक्तीकरण पर काम किया गया है। अब देश की बेटी के लिए हिंदुस्तान में कोई ऐसा सेक्टर नहीं है, जहां देश की बेटियों के लिए दरवाजे बंद हो। आज हमारे देश की बेटियां फाइटर जेट भी उड़ा रही हैं आर हमारे देश की सीमाओं को भी सुरक्षित रख रही हैं।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, ग्रामीण अर्थव्यवस्था हमारी है। विमेन सेल्फ हेल्प ग्रुप्स से 10 करोड़ बहनें जुड़ी हैं और आर्थिक गतिविधि करती हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को वे नई ताकत दे रही हैं और मुझे आज खुशी है कि इन प्रयासों का परिणाम है कि करीब-करीब एक करोड़ लखपति दीदी आज देश में बनी हैं। जब मेरी उनसे बातें होती हैं, उनका जो आत्मविश्वास देखता हूं, मेरा पक्का विश्वास है कि हम जिस तरह आगे बढ़ रहे हैं, आने वाले हमारे कार्यकाल में 3 करोड़ लखपति दीदी हमारे देश के अंदर देखेंगे। आप कल्पना कर सकते हैं कि गांव की अर्थव्यवस्था में कितना बड़ा बदलाव हो जाएगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारे देश में बेटियों के संबंध में जो पहले सोच थी, समाज के घर में घुस गई थी, दिमाग में भी घुस गई थी, आज वह सोच कितनी तेजी से बदल रही है। थोड़ा सा बारीकी से देखेंगे तो हमें पता चलेगा कि कितना बड़ा सुखद बदलाव आ रहा है। पहले अगर बेटी का जन्म होता था तो चर्चा होती थी कि अरे, खर्चा कैसे उठाएंगे? उसको कैसे पढ़ाएंगे? उसकी आगे की जिंदगी एक प्रकार से कोई बोझ है, ऐसी चर्चाएं हुआ करती थीं। आज बेटी पैदा होती है तो पूछा जाता है कि अरे, सुकन्या समृद्धि एकाउंट खुला कि नहीं खुला? यह बदलाव आया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, पहले सवाल होता था कि प्रेग्नेंट होने पर नौकरी नहीं कर पाओगी। पहले यह बात होती थी कि प्रेग्नेंट होने पर नौकरी नहीं कर पाओगी। आज कहा जाता है कि 26 हफ्ते की पेड लीव और बाद में भी अगर छुट्टी चाहिए तो मिलेगी। यह बदलाव होता है। पहले समाज में सवाल होते थे कि महिला होकर नौकरी क्यों करना चाहती हो? क्या पति की सैलरी कम पड़ रही है? ऐसे सवाल होते थे। आज लोग पूछ रहे हैं कि मैडम आपका जो स्टार्ट-अप है न, बहुत प्रगति कर रहा है। क्या मुझे नौकरी मिलेगी? यह बदलाव आया है।... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, एक समय था, जब सवाल पूछा जाता था कि बेटी की उम्र बढ़ रही है, शादी कब करोगी? बेटी की उम्र बढ़ रही है, शादी कब करोगी? आज पूछा जाता है कि बेटी पर्सनल और प्रोफेशनल दोनों कामों को संतुलित कितना बढ़िया करती हो, कैसे करती हो?

आदरणीय अध्यक्ष जी, एक समय था, घर में कहा जाता था कि घर के मालिक घर पर है कि नहीं है? ऐसा पूछा जाता था। घर के मुखिया को बुलाइये। ऐसा कहते थे।

(1815/VB/SNT)

आज किसी के घर जाते हैं, तो घर महिला के नाम पर, बिजली का बिल उसके नाम पर आता है, पानी, गैस सब उसके नाम पर है, तो परिवार के मुखिया की जगह आज मेरी माताएं एवं बहनों के नाम हैं। यह बदलाव है।

अमृतकाल में विकसित भारत का हमारा जो संकल्प है, उसमें यह बदलाव एक बहुत बड़ी शक्ति के रूप में उभरने वाला है और मैं उस शक्ति के दर्शन कर पा रहा हूँ।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, किसानों के लिए आँसू बहाने की आदत मैंने बहुत देखी है। किसानों के साथ कैसा-कैसा विश्वासघात किया गया है, उसे इस देश ने देखा है। कांग्रेस के समय कृषि के लिए कुल वार्षिक बजट 25 हजार करोड़ रुपए होता था। हमारी सरकार का बजट है सवा लाख करोड़ रुपए का। कांग्रेस ने अपने 10 वर्षों के कार्यकाल में किसानों से 7 लाख करोड़ रुपए के धान और गेहूँ खरीदे थे। हमने 10 वर्षों में करीब 18 लाख करोड़ रुपए के धान और गेहूँ की खरीद की है। कांग्रेस सरकार ने नाम मात्र की दलहन और तिलहन की खरीदी कभी की हो, तो की हो, लेकिन हमने सवा लाख करोड़ रुपए से भी अधिक के दलहन और तिलहन खरीदे हैं।

हमारे कांग्रेस के साथियों ने पीएम किसान सम्मान निधि का मजाक उड़ाया। जब मैंने मेरी पहली टर्म में यह योजना शुरू की थी, तो मुझे याद है, झूठे नरेटिव की जो फैशन चल पड़ी है, गांवों में जाकर कहा जाता था, देखिए मोदी के पैसे मत लेना, ये एक बार चुनाव जीत गया, तो सारे पैसे ब्याज समेत तुमसे वापस मांगेगा। ऐसा झूठ फैलाया गया था। किसानों को इतना मूर्ख बनाने की कोशिश की गई थी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, पीएम किसान सम्मान निधि में हमने 2 लाख 80 हजार करोड़ रुपए भेजे हैं। पीएम फसल बीमा योजना के तहत 30 हजार रुपए का प्रिमियम और उसके सामने डेढ़ लाख करोड़ रुपए मेरे किसान भाई-बहनों के लिए दिए गए हैं।

कांग्रेस ने शासन काल में, उनके काम में तो मछुआरे और पशुपालकों का नामो-निशान नहीं था। पहली बार, इस देश में मछुआरों के लिए अलग मंत्रालय बना और पशुपालन के लिए अलग मंत्रालय बना। पहली बार पशुपालकों और मछुआरों को किसान क्रेडिट कार्ड दिया गया ताकि कम ब्याज पर उनको बैंक से पैसे मिल सकें और वे अपना कारोबार बढ़ा सकें। किसानों और मछुआरों की भी चिंता होती है, चिंता सिर्फ जानवरों की नहीं होती है। ये जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। आर्थिक चक्र को चलाने में इन पशुओं की भी बहुत बड़ी भूमिका होती है।

हमने फुट एंड माउथ डिजीज जैसे रोगों से पशुओं को बचाने के लिए 50 करोड़ से ज्यादा टीके लगवाए हैं। पहले यह कभी सोचा नहीं गया था।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज भारत में युवाओं के लिए जितने भी नये अवसर बने हैं, ये पहले कभी नहीं बने। आज पूरी वोकैबलरी बदल गयी है। ऐसे शब्द आए हैं, जो पहले कभी सुनने को नहीं मिलते थे। ऐसे शब्द बोलचाल की सहज दुनिया में आ चुके हैं।

आज चारों तरफ स्टार्ट-अप्स की गूंज है। आज नि-कॉम्स चर्चा में हैं। आज डिजिटल क्रिएटर्स का एक बहुत बड़ा वर्ग हमारे सामने है। आज गिग इकोनॉमी की चर्चा हो रही है। युवाओं की जुबान पर नये भारत की नयी वोकैबलरी है। यह नये आर्थिक साम्राज्य का नया परिवेश है, नई पहचान है।

(1820/CS/AK)

ये सेक्टर युवाओं के लिए रोजगार के लाखों नए अवसर बना रहे हैं। वर्ष 2014 से पहले डिजिटल इकोनॉमी की साइज न के बराबर थी, बहुत ज्यादा उसकी चर्चा भी नहीं थी। आज भारत दुनिया की अग्रणी डिजिटल इकोनॉमी है। लाखों युवा इससे जुड़े हैं और आने वाले समय में यह डिजिटल इंडिया मूवमेंट जो है, वह देश के नौजवानों के लिए अनेक-अनेक अवसर, अनेक-अनेक रोजगार, अनेक-अनेक प्रोफेशंस के लिए अवसर लेकर आने वाला है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आज भारत, मेड इन इंडिया फोन दुनिया में पहुँच रहे हैं। दुनिया में हम नंबर दो बन गए हैं और एक तरफ सस्ता मोबाइल प्राप्त हुआ है और दूसरी तरफ सस्ता डेटा। इन दोनों ने देश में एक बहुत बड़ा रिवॉल्यूशन लाया है और दुनिया में हम जिस कीमत पर इसे प्राप्त करवा रहे हैं, हम सबसे कम कीमत पर करवा रहे हैं। वह इसका एक कारण बना है। आज मेड इन इंडिया अभियान, रिकॉर्ड मैन्युफैक्चरिंग, रिकॉर्ड एक्सपोर्ट देश देख रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, ये सारे काम हमारे नौजवानों के लिए सबसे ज्यादा रोजगार लाने वाले काम हैं, सबसे ज्यादा रोजगार के अवसर पैदा करने वाले काम हैं।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, 10 वर्ष में टूरिज्म सेक्टर में अभूतपूर्व उछाल आया है। हमारे देश में यह ग्रोथ हुई है और टूरिज्म सेक्टर ऐसा है, जिसमें कम से कम पूँजी निवेश में अधिक से अधिक लोगों को रोजगार देने का अवसर है। सामान्य से सामान्य व्यक्ति को भी यह रोजगार देने वाला अवसर है। स्वरोजगार की सबसे ज्यादा संभावनाओं वाला टूरिज्म क्षेत्र है। 10 वर्ष में दोगुने एयरपोर्ट्स बने हैं। सिर्फ एयरपोर्ट्स बने हैं, ऐसा नहीं है। भारत दुनिया का तीसरा बड़ा डोमेस्टिक एविएशन सेक्टर बन चुका है। हम सबको खुशी होनी चाहिए। भारत की जो एयरलाइंस कंपनियाँ हैं, उन्होंने एक हजार नए एयरक्राफ्ट्स के ऑर्डर दिए हैं। देश में एक हजार नए एयरक्राफ्ट्स होंगे।... (व्यवधान) जब इतने सारे हवाई जहाज ऑपरेट होंगे, सारे एयरपोर्ट कितने दमखम पर होंगे, कितने पायलेट्स की जरूरत पड़ेगी, कितने हमें क्रू मेंबर चाहिए, कितने इंजीनियर चाहिए, कितने ग्राउंड सर्विस के लिए लोग चाहिए यानी रोजगारी के नये-नये क्षेत्र खुलते जा रहे हैं। एविएशन सेक्टर भारत के लिए एक बहुत बड़ा नया अवसर बनकर आया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारी कोशिश रही है कि इकोनॉमी को हम फॉर्मलाइज करने की दिशा में मजबूती से कदम उठाएं। युवाओं को नौकरी भी मिले, सोशल सिक्योरिटी भी मिले। इन दोनों को लेकर और जिन बातों के आधार पर हम निर्णय करते हैं और देश में भी माना जाता है, वह ईपीएफओ का डाटा होता है। ईपीएफओ में जो रजिस्ट्रेशन होता है, 10 साल में करीब 18 करोड़ नए सब्सक्राइबर आए हैं। वह तो सीधा पैसों से जुड़ा खेल होता है, उसमें फर्जी नाम नहीं होते हैं। मुद्रा लोन पाने वालों में 8 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिन्होंने जीवन में पहली बार अपना कारोबार शुरू किया है, बिजनेस शुरू किया है। जब वह मुद्रा लोन लेता है तो खुद तो रोजगारी पाता ही है, एक या दो और लोगों को भी रोजगारी देता है, क्योंकि उसका काम ऐसा होता है। हमने लाखों स्ट्रीट वेंडर्स को सपोर्ट किया है। 10 करोड़ महिलाएं एसएचजी से जुड़ीं, जैसा मैंने कहा है कि एक करोड़ लखपति दीदी, यह अपने आप में बहुत बड़ी चीज है।

(1825/IND/UB)

मैंने जैसे कहा कि हमने तीन करोड़ का टार्गेट रखा है। कुछ आंकड़े हैं, जो केवल अर्थशास्त्री ही नहीं समझ सकते, बल्कि सामान्य आदमी भी समझ सकते हैं। वर्ष 2014 के पहले दस वर्षों में इनफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में करीब-करीब 12 लाख करोड़ रुपये का बजट था। दस साल में 12 लाख करोड़ रुपये का बजट था। बीते दस वर्षों में इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण के अंदर बजट 44 लाख करोड़ रुपये का है। रोजगार कैसे बढ़ते हैं, यह इससे स्पष्ट होता है।

अध्यक्ष जी, इस राशि से जितनी बड़ी मात्रा में काम हुआ है, उसके कारण बहुत लोगों को रोजी-रोटी मिली है, उसका आप अंदाजा लगा सकते हैं। हम भारत को मैनुफैक्चरिंग का, रिसर्च का, इनोवेशन का हब बनाने की दिशा में देश की युवा शक्ति को प्रोत्साहित करने का काम कर रहे हैं, व्यवस्थाएं विकसित कर रहे हैं, आर्थिक मदद की योजनाएं बना रहे हैं।

अध्यक्ष जी, एनर्जी के क्षेत्र में हम हमेशा डिपेंडेंट रहे हैं। एनर्जी के सेक्टर में हमें आत्मनिर्भर होने की दिशा में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है और हमारी कोशिश ग्रीन एनर्जी की तरफ है। हाईड्रोजन को लेकर हम बहुत बड़ी मात्रा में आगे बढ़ रहे हैं। इसमें अभूतपूर्व निवेश हो रहा है। उसी प्रकार से दूसरा क्षेत्र है, जिसमें भारत को लीड लेनी होगी और वह सेमी कंडक्टर का क्षेत्र है। पिछली सरकारों ने प्रयास किए, लेकिन सफलता नहीं मिली। अब हम जिस स्थिति में पहुंचे हैं, मैं विश्वास से कहता हूं कि भले ही हमारे तीन दशक खराब हो गए हैं, लेकिन आने वाला समय हमारा है। मैं सेमी कंडक्टर के क्षेत्र में अभूतपूर्व निवेश देख रहा हूं और भारत दुनिया में एक बहुत बड़ा कंट्रीब्यूशन करेगा। इन सारे कारणों से क्वालिटी जॉब की संभावनाएं बहुत बढ़ने वाली हैं। हमने समाज में अलग स्किल मिनिस्ट्री बनाई। इसके पीछे हित यह है कि देश के नौजवानों को हुनर तथा ऐसे अवसर मिलें कि हम इंडस्ट्री 4.0 के लिए मैनपॉवर को तैयार करते हुए आगे बढ़ने की दिशा में काम कर रहे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यहां महंगाई को लेकर काफी बातें कही गई हैं। मैं जरूर कहना चाहूंगा कि देश के सामने सच्चाई आनी चाहिए। इतिहास गवाह है कि जब भी कांग्रेस आती है महंगाई लाती है। मैं कुछ वक्तव्य आज सदन में कहना चाहता हूं। मैं किसी की आलोचना करने के लिए नहीं कह रहा हूं लेकिन हो सकता है कि हमारी बात जो समझ नहीं पाते हैं, वे अपने लोगों की बात को समझने का प्रयास करेंगे। कभी कहा गया था और किसने कहा था, वह मैं बाद में कहूंगा – 'हर चीज की कीमत बढ़ जाने की वजह से मुसीबत फैली है, आम जनता उनमें फंसी है।' यह स्टेटमेंट ऑफ फैक्ट हमारे पंडित नेहरू जी का है और लाल किले से उस समय कहा था। 'हर चीज की कीमत बढ़ जाने की वजह से मुसीबत फैली है, आम जनता उनमें फंसी है' – यह उस समय की बात है। उन्होंने लाल किले से माना था। चारों तरफ महंगाई बढ़ी थी। इस वक्तव्य के दस साल बाद के दूसरे वक्तव्य का कोट आपके सामने रखता हूं – 'आप लोग आज कल भी कुछ दिक्कतों में हैं, परेशानियों में हैं महंगाई की वजह से। कुछ तो लाचारी है, पूरे तौर से काबू की बात नहीं हो पा रही हमारे इस समय में, हालांकि वह काबू में आएगी।' दस साल बाद भी महंगाई के यही गीत कहे गए थे और यह किसने कहा था? फिर से यह नेहरू जी ने अपने कार्यकाल में ही कहा था, तब देश का

पीएम रहते हुए उन्हें।12 साल हो चुके थे। लेकिन हर बार महंगाई कंट्रोल में नहीं आ रही है, महंगाई के कारण आपको मुसीबत हो रही है, इसी के गीत गाते रहे।

(1830/RV/SRG)

आदरणीय अध्यक्ष जी, अब मैं एक और भाषण का हिस्सा पढ़ रहा हूं - "जब देश आगे बढ़ता है तो कुछ हद तक कीमतें भी बढ़ती हैं। हमको यह भी देखना है कि जो भी आवश्यक वस्तु हैं, उनकी कीमत को कैसे थामें?" यह किसने कहा था? इसे इन्दिरा गाँधी जी ने कहा था। वर्ष 1974 में, जब उन्होंने देश में सारे दरवाजों पर ताले लगा दिए थे, लोगों को जेल में बंद कर दिया था, उस समय 30 प्रतिशत महंगाई थी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, उनके भाषण में यहां तक कहा गया था, क्या कहा गया था, यह सुनकर आप चौंक जाएंगे, उन्होंने कहा था - 'अगर जमीन न हो, यानी कुछ पैदावार के लिए जमीन न हो तो अपने गमले और कनस्तर में सब्जी उगा लें।' ऐसी सलाहें उच्च पद पर बैठे हुए लोग दिया करते थे। हमारे देश में महंगाई को लेकर दो गाने सुपरहिट हुए थे, घर-घर गाए जाते थे। एक, 'महंगाई मार गई', और दूसरा, 'महंगाई डायन खाए जात है।' ये दोनों गाने कांग्रेस के शासनकाल में आए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यूपीए के शासनकाल में महंगाई डबल डिजिट में थी, इसको नकार नहीं सकते हैं। यूपीए की सरकार का तर्क क्या था? असंवेदनशीलता के साथ यह कहा गया था कि 'महंगी आइस्क्रीम खा सकते हो तो महंगाई का रोना क्यों रो रहे हो।' जब भी कांग्रेस आई है, उसने महंगाई को ही मजबूत किया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमारी सरकार ने महंगाई को लगातार नियंत्रण में रखा है।... (व्यवधान) दो-दो युद्धों के बावजूद और 100 साल में आए सबसे बड़े संकट के बावजूद महंगाई नियंत्रण में है और हम यह कर पाए हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यहां पर बहुत गुस्सा व्यक्त किया गया है। जितना हो सका, उतने कठोर शब्दों में गुस्सा व्यक्त किया गया है। उनका दर्द मैं समझता हूं। उनकी मुसीबत और यह गुस्सा, इसे मैं समझता हूं, क्योंकि 'तीर निशाने पर लगा है।' भ्रष्टाचार पर एजेंसियां एक्शन ले रही हैं। उसको लेकर भी इतना गुस्सा! क्या-क्या शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है?

आदरणीय अध्यक्ष जी, दस साल पहले हमारे पार्लियामेंट में, सदन में क्या चर्चा होती थी? सदन का पूरा समय घोटालों की चर्चा पर जाता था, भ्रष्टाचार की चर्चा पर जाता था, लगातार एक्शन की डिमांड होती थी। सदन यही मांग करता रहता था कि 'एक्शन लो', 'एक्शन लो', 'एक्शन लो।' देश ने वह कालखंड देखा है। उस समय रोजाना चारों तरफ भ्रष्टाचार की खबरें थीं, और आज जब भ्रष्टाचारियों पर एक्शन लिया जा रहा है तो लोग उनके समर्थन में हंगामा करते हैं।... (व्यवधान)

(1835/GG/RCP)

आदरणीय अध्यक्ष जी, इनके समय में एजेंसियों का सिर्फ और सिर्फ राजनीतिक उपयोग किया जाता था, बाकी उनको कोई और काम नहीं करने दिया जाता था। अब आप देखिए कि उनके

कालखंड में क्या हुआ? पीएमएलए एक्ट के तहत हमने पहले के मुकाबले दोगुने से अधिक केस दर्ज किए। कांग्रेस के समय में ईडी ने 5,000 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की थी। हमारे कार्यकाल में ईडी ने एक लाख करोड़ रुपये की संपत्ति दर्ज की है। देश का यह लूटा हुआ माल देना ही पड़ेगा। जिनका इतना सारा माल पकड़ा जाता हो, नोटों के ढेर पकड़े जाते हों, और अधीर बाबू तो बंगाल से आते हैं, उन्होंने तो नोटों के ढेर देखे हैं, किस-किस के घर में से पकड़े जाते हैं, किस-किस के राज्य में पकड़े जाते हैं। यह देश इन नोटों के ढेरों को देख-देख कर चौंक गया है। लेकिन अब जनता को आप मूर्ख नहीं बना सकते हैं। जनता देख रही है कि किस प्रकार से यूपीए सरकार में जो भ्रष्टचार की बातें हुआ करती थीं, उसका टोटल 10-15 लाख करोड़ रुपये का रहा है, उसकी चर्चा होती थी। हमने लाखों-करोड़ों के घोटाले तो पकड़े ही और उन सारे पैसों को गरीबों के काम में लगा दिया, गरीबों के कल्याण के लिए लगा दिया। अब बिचौलियों के लिए गरीबों को लूटना बहुत मुश्किल हो गया है। डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर, जन-धन अकाउंट, आधार, मोबाइल आदि की ताकत हमने पहचानी है। तीस लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रकम हमने लोगों के खाते में सीधी पहुंचाई है। कांग्रेस के एक प्रधान मंत्री ने कहा था कि वे एक रुपया भेजते हैं और लोगों के पास 15 पैसे पहुंचते हैं, अगर उस हिसाब से मैं देखूं, तो हमने जो तीस लाख रुपये भेजे हैं, अगर उनका ज़माना होता तो कितना रुपया कहां चला जाता? इसका हिसाब लगाइए। मुश्किल से 15 पर्सेंट लोगों के पास पहुंचता, बाकी सब कहां चला जाता?

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमने दस करोड़ फर्ज़ी नाम हटाए हैं। अभी लोग पूछते हैं न कि पहले इतना आंकड़ा था, अब कम क्यों हो गया। आपने ऐसी व्यवस्था बनाई थी कि जिस बेटी का जन्म नहीं हुआ, उसको आपके यहां से विधवा पेंशन जाती थी। इस प्रकार से सरकारी योजनाओं को मारने के जो रास्ते थे, उनको बंद कर के दस करोड़ फर्ज़ी नाम हटाए हैं। यह जो परेशानी है न, वह इन चीजों की हैं, क्योंकि उनकी रोज़मर्रा की कमाई बंद हो गई है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमने इन फर्ज़ी नामों को हटा कर करीब-करीब तीन लाख करोड़ रुपये फर्ज़ी हाथों में जाने से बचाए हैं, गलत हाथों में जाने से बचाए हैं। देश के टैक्सपेयर का पाई-पाई बचाना और सही काम में लगाना, इसके लिए हमने जीवन खपा रखे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, सभी राजनीतिक दलों को भी सोचने की जरूरत है और समाज में भी जो लोग बैठे हैं, उनको देखने की जरूरत है। आज देश का दुर्भाग्य है, पहले तो क्लासरूम में भी कोई अगर चोरी करता था, किसी की कॉपी करता था, तो वह भी दस दिन तक अपना मुंह किसी को दिखाता नहीं था। आज जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप सिद्ध हो चुके हैं, जो जेलों में समय काट कर के पैरोल पर आए हैं, आज वाशिंग मशीन से भी बड़ा, उनको कंधे पर बिठा कर, ऐसे चोरों का सार्वजनिक जीवन में महिमामंडन कर रहे हैं।

(1840/MY/PS)

आप देश को कहाँ ले जाना चाहते हैं? जिनकी सजा हो चुकी है, मैं यही तो समझता हूं कि जो आरोप है, उनके लिए तो आप सोच सकते हैं, लेकिन जिनका गुनाह सिद्ध हो चुका है, जो सजा काट चुके हैं, जो सजा काट रहे हैं, ऐसे लोगों का आप महिमामंडन करते हैं।… (व्यवधान) कौन-सा

कल्चर है, देश की भावी पीढ़ी को आप क्या प्रेरणा देना चाहते हो? ऐसी कौन-सी आपकी मजबूरी है? ऐसे लोगों का महिमामंडन किया जा रहा है, उनको महान बताया जा रहा है।

माननीय अध्यक्ष जी जहां संविधान का राज है, जहां लोकतंत्र है, ऐसी बातें लंबी नहीं चल सकती हैं। ये लोग लिख कर के रखें। उनके महिमामंडन का जो काम चल रहा है, वे अपने ही खात्मे की चिट्ठी पर सिग्नेचर कर रहे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, जांच करना एजेंसियों का काम है। एजेंसियाँ स्वतंत्र होती हैं और संविधान ने उनको स्वतंत्र रखा हुआ है।... (व्यवधान) जज करने का काम न्यायाधीश का है और वे अपना काम कर रहे हैं।

अध्यक्ष जी, इस पवित्र सदन में मैं फिर से दोहराना चाहूंगा, जिसको जितना जुल्म मुझ पर करना है, कर लें, लेकिन भ्रष्टाचार के खिलाफ मेरी लड़ाई चलती रहेगी। जिसने देश को लूटा हैं, उनको लौटाना पड़ेगा। जिन्होंने देश को लूटा है, उनको लौटाना पड़ेगा। यह मैं देश के इस पवित्र सदन से वादा करता हूं। जिसको जो आरोप लगाना है, लगा लें, लेकिन देश को लूटने नहीं दिया जाएगा और जिसने लूटा है, उसे लौटाना पड़ेगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश सुरक्षा और शांति का अहसास कर रहा है। पिछले 10 वर्ष की तुलना में सुरक्षा के क्षेत्र में देश वाकई सशक्त हुआ है। आतंकवाद, नक्सलवाद अब एक छोटे दायरे में सिमटा हुआ है। लेकिन, भारत की टेररिज्म के प्रति जो जीरो टॉलरेंस नीति है, आज पूरे विश्व को भी भारत की इस नीति की तरफ चलने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

भारत की सेनाएं सीमाओं से लेकर समुद्र तक अपने सामर्थ्य को लेकर आज भी उनकी धाक है।... (व्यवधान) हमें अपनी सेना के पराक्रम पर गर्व होना चाहिए। हम कितना ही उनकी मोरल तोड़ने की कोशिश करें, मुझे अपनी सेना पर भरोसा है। मैंने उनके सामर्थ्य को देखा है। कुछ राजनेता सेना के लिए हल्के-फुल्के शब्द बोलते हैं कि इससे हमारे देश की सेना डिमोरलाइज होगी, ऐसा कोई सपनों में भी रहता है तो वह निकल जाए। वे देश के मनोबल को खत्म नहीं कर सकते हैं। किसी के एजेंट बन कर के इस प्रकार की भाषा अगर कहीं से भी उठती है तो देश कभी स्वीकार नहीं कर सकता है। जो खुलेआम देश में अलग देश बनाने की वकालत करते हैं, जोड़ने की बातें छोड़ो, तोड़ने की कोशिश की जा रही है, आपके अंदर क्या पड़ा हुआ है? क्या इतने टुकड़े करके भी आपके मन का समाधान नहीं हुआ है? आप देश के इतने टुकड़े कर चुके हैं, क्या और टुकड़े करना चाहते हैं, कब तक करते रहोगे?

आदरणीय अध्यक्ष जी, इसी सदन में अगर कश्मीर की बात होती थी, तो हमेशा चिंता का स्वर निकलता था, छींटाकशी होती थी, आरोप-प्रत्यारोप होते थे। आज जम्मू-कश्मीर में अभूतपूर्व विकास की चर्चा हो रही है और गर्व के साथ हो रही है।

(1845/CP/SMN)

पर्यटन लगातार बढ़ रहा है। जी-20 समिट वहां होती है। पूरा विश्व आज उसकी सराहना करता है। आर्टिकल 370 को लेकर कैसा हौवा बना के रखा था? कश्मीर के लोगों ने जिस प्रकार से उसको गले लगाया है, कश्मीरी जनता ने जिस प्रकार से गले लगाया है, आखिर यह समस्या

किसकी देन थी, किसने देश के माथे पर मढ़ा था, किसने भारत के संविधान के अंदर इस प्रकार की दरार करके रखी हुई थी?

आदरणीय अध्यक्ष जी, अगर नेहरू जी का नाम लेते हैं तो उनको बुरा लगता है। लेकिन कश्मीर को जो समस्यायें झेलनी पड़ीं, उसके मूल में उनकी यह सोच थी और उसी का परिणाम इस देश को भुगतना पड़ रहा है। जम्मू-कश्मीर के लोगों को, देश के लोगों को नेहरू जी की गलतियों की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। ... (व्यवधान) आदरणीय अध्यक्ष जी, वह भले गलतियां करके गए, लेकिन हम मुसीबतें झेलकर भी गलतियां सुधारने के लिए हमारी कोशिश जारी रखेंगे। हम रुकने वाले नहीं हैं। हम देश के लिए काम करने के लिए निकले हुए लोग हैं। हमारे लिए नेशन फर्स्ट है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं सभी राजनीतिक दलों के नेताओं से आग्रह करूंगा, सभी माननीय सदस्यों से आग्रह करूंगा। भारत के जीवन में एक बहुत बड़ा अवसर आया है, वैश्विक परिवेश में भारत के लिए बड़ा अवसर आया है, एक नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का अवसर आया है। राजनीति अपनी जगह पर होती है, आरोप-प्रत्यारोप अपनी जगह पर होता है, लेकिन देश से बढ़कर कुछ नहीं होता है। इसलिए, आइए, मैं निमंत्रण देता हूं आपको, कंधे से कंधा मिलाकर हम देश के निर्माण के लिए आगे बढ़ें। राजनीति में किसी भी जगह पर रहते हुए भी राष्ट्र निर्माण में आगे बढ़ने में कोई रुकावट नहीं आती। हम इस राह को मत छोड़ें। मैं आपका साथ मांग रहा हूं, मां भारती के कल्याण के लिए साथ मांग रहा हूं, विश्व के अंदर जो अवसर आया है, उस अवसर को भुनाने के लिए आपका साथ मांग रहा हूं। मैं आपका सहयोग चाहता हूं, 140 करोड़ देशवासियों की जिंदगी को और समृद्ध बनाने के लिए, और सुखी बनाने के लिए। लेकिन, अगर आप साथ नहीं दे सकते हैं और अगर आपका हाथ ईटें फेंकने पर ही तुला हुआ है, तो आप लिखकर रखिए, आपकी हर ईंट को मैं विकसित भारत की नींव मजबूत करने के लिए लगा दूंगा। आपके हर पत्थर को, मैं विकसित भारत के जिन सपनों को लेकर हम चले हैं, उसकी नींव मजबूत करने के लिए लगा दूंगा और देश को हम उस समृद्धि की ओर लेकर जाएंगे। जितने पत्थर उछालने हैं, उछाल लीजिए, आपका हर पत्थर समृद्ध भारत के, विकसित भारत के सपने को समृद्ध बनाने के लिए हर पत्थर को मैं काम में ले लूंगा। यह भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं साथियों की तकलीफें जानता हूं। लेकिन, वे जो कुछ भी बोलते हैं, मैं दु:खी नहीं होता और दु:खी होना भी नहीं चाहिए, क्योंकि मैं जानता हूं कि ये नामदार हैं, हम कामदार हैं। हम कामदारों को तो नामदारों से सुनना ही पड़ता है। नामदार कुछ भी कहते रहें, कुछ भी कहने के उनको तो जन्मजात अधिकार मिले हुए हैं और हम कामदारों को सुनना होता है। हम सुनते भी रहेंगे और देश को सहेजते भी रहेंगे, देश को आगे बढ़ाते रहेंगे। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे इस पवित्र सदन में आदरणीय राष्ट्रपति जी के उद्बोधन को समर्थन करने के लिए बोलने का अवसर दिया। मैं आदरणीय राष्ट्रपति जी के इस उद्बोधन को समर्थन देते हुए, धन्यवाद प्रस्ताव पर आभार व्यक्त करते हुए, मेरी वाणी को विराम देता हूं।...(व्यवधान)

(इति)

(1850/NK/SM)

माननीय अध्यक्ष: धन्यवाद प्रस्ताव पर श्रीमती अपरूपा पोद्दार और श्री एन. के. प्रेमचन्द्रन ने अपने-अपने संशोधन प्रस्तुत किए हैं। अब मैं सभी संशोधनों को एक साथ सभा में मतदान के लिए रखता हूं।

(संशोधन मतदान के लिए रखे गए तथा अस्वीकृत हुए।)

माननीय अध्यक्ष: अब मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव को सभा में मतदान के लिए रखता हूं।

प्रश्न यह है:

> " कि माननीय राष्ट्रपति जी की सेवा में निम्नलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाए:-
>
> "कि इस सत्र में समवेत लोक सभा के सदस्य राष्ट्रपति जी के उस अभिभाषण के लिए, जो उन्होंने 31 जनवरी, 2024 को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष देने की कृपा की है, उनके हम अत्यंत आभारी हैं।"

(प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।)

माननीय अध्यक्ष: सदन की कार्यवाही मंगलवार, 6 फरवरी, 2024 को प्रात: 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

1852 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा मंगलवार, 06 फरवरी 2024/17 माघ 1945 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।